

## महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द के योग दर्शन में निहित शैक्षिक विचार

मंजुला पचौरी<sup>1</sup>, डा. विभा चौहान<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

<sup>2</sup> एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

### सारांश

आज शिक्षा का जो रूप हमें दिखायी देता है, उसका अपना एक बहुत विस्तृत इतिहास है। भारतभूमि में अनेकों ऋषि व महापुरुषों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने विचारों एवं अपनी कृतियों के द्वारा इस देश को सत्य अहिंसा व विकास का मार्ग दिखाया है। योग शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित समस्त उपायों का उद्गम स्थल योग शिक्षा शास्त्रियों के विचार ही हैं। जिस प्रकार किसी वृक्ष की शाखायें तथा उप शाखायें उसके तने से निःसृत होकर आकाश में छा जाती हैं। इसी प्रकार दार्शनिक पृष्ठ भूमि से भी शिक्षा के अनेक अंग पुण्यित एवं पल्लवित होते हैं। अतीत का अवलोकन करने से यह परिलक्षित होता है कि योग शिक्षा जगत में अनेक धाराओं का आविर्भाव हुआ है और कालान्तर में आने वाली नवीन धारा में समाहित होकर दर्शनों, विचारों तथा आन्दोलनों का उन्होंने एक समाहार रूप प्रस्तुत किया है। इसके मूल में योग शिक्षा मर्मज्ञों का अमूल्य योगदान है।

**मूल शब्द:** शैक्षिक विचार, सत्य अहिंसा व विकास, महर्षि पतंजलि

मानवीय जीवन के लिये भारतीय शैक्षिक चिन्तन धारा की उपयोगिता को आगे बढ़ाकर महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द जी ने शिक्षा दर्शन में उपलब्ध तथ्यों का महत्व प्रतिपादित किया है। प्रत्येक व्यक्ति में अनन्त ज्ञान और शक्ति का वास है। अष्टांग योग उन्हें जागृत करने का मार्ग प्रशस्त करता है। इसका एकमात्र उद्देश्य है— मनुष्य के मन को एकाग्र कर उसे समाधि नामक पूर्ण एकाग्रता की अवस्था तक पहुँचा देना। स्वभाव से ही मानव मन चंचल है। वह एक क्षण भी किसी वस्तु पर ठहर नहीं। इस मन की चंचलता को नष्ट कर उसे किस प्रकार अपने वश कर सकता है। इस मन में लाया जाये, किस प्रकार बिखरी हुई शक्तियों को समेटकर उसे सर्वोच्च

लक्ष्य में एकाग्र कर दिया जाये यही महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग है। जो साधक प्राण का संयम कर प्रत्याहार, धारणा और ध्यान द्वारा इस समाधि अवस्था की प्राप्ति करना चाहते हैं, उनके लिये पतंजलि योग शिक्षा सम्बन्धी विचार उपादेय सिद्ध होगा। महर्षि अरविन्द एक महान आदर्शवादी होते हुये भी यथार्थवादी थे। उनका दर्शन समन्वित रचनात्मक दर्शन एवं सर्वांग योग दर्शन है। उनकी मान्यता है कि जीवन और जगत दोनों सत्य हैं। जीवन का लक्ष्य सर्वांग जीवन है जिसमें तन, मन और आत्मा सभी का विकास होना चाहिये। वास्तव में यह विकास तभी सम्भव है जब व्यक्ति-आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करें। सर्वांग योग दर्शन यह बताता है कि मानव को योग द्वारा अज्ञान, अंधकार और मृत्यु से ज्ञान, प्रकाश और अमरत्व की ओर ले जाना चाहिये। इतना ही नहीं महर्षि की यह धारणा है कि योग आत्मतत्त्व की अनुभूति कर ब्रह्म में लीन होने की बात नहीं करता है। इन्होंने अपने प्रमुख ग्रन्थ 'लाइफ डिवाइन' में सत्य के साक्षात्कार का वर्णन किया है।

### अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन कतिपय उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है जो इस प्रकार हैं।

1. महर्षि पतंजलि के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना
2. महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना
3. महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द के "योग दर्शन" में निहित सिद्धान्तों व दार्शनिक विचारों की विवेचना का प्रयास करना।

4. महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
5. महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करके वर्तमान शिक्षा के लिये सुझाव देना।
6. योग दर्शन के व्यावहारिक पक्ष अष्टांग योग को प्रकाश में लाने का प्रयास करना।

### महर्षि पतंजलि का योग दर्शन

महर्षि पतंजलि के अनुसार योग दर्शन जीवन को सार्थक बनाने वाले साधनों में उत्तम साधन है। इसका महत्व तो इसी से जाना जा सकता है कि यह मनुष्य को सभी प्रकार के आवरणों और विक्षेपों से सदा के लिये मुक्त करता हुआ ऐसा विशुद्ध अन्तःकरण वाला बना देता है कि परमात्मा से उसका अभिन्न सम्बन्ध अपने आप स्थापित हो जाता है। योग से मुक्त विशुद्ध अन्तःकरण वाला विजितात्मा-शरीरजयी, जितेन्द्रिय और सब भूतों में अपनी आत्मा को देखने वाला ज्ञानी हो जाता है। इस प्रकार स्थित हुआ पुरुष लोक-कल्याण के लिये कर्म करता हुआ भी उनसे लिप्त नहीं होता अर्थात् कर्मों से नहीं बँधता।

वस्तुतः योग तन को सुगठित, मन को नियन्त्रित और आत्मा को उद्भासित करता है। यह सभी अभ्युत्थानों का सबसे मुख्य आधार है। इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य के सारे संशय दूर हो जाते हैं फिर तो यह जीवन के चरम को ही प्राप्त कर लेता है— अपनी चरम ऊँचाई के चरम बिन्दु पर पहुँचकर योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का अप्रतिम माध्यम बन जाता है।

योग का यह वैशिष्ट्य है कि उसकी साधना की ज्योति में आत्मतत्त्व द्वारा परब्रह्म परमात्मा-तत्त्व की प्राप्ति हो जाती है, फिर तो उसके सामने किसी प्रकार के बन्धन के रहने का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता है।

योग का शिक्षा में समावेश होने से आलस्य त्याग, आत्मबल-विस्तार, भय संशयनिवारण, उत्साहवृद्धि स्वास्थ्य लाभ, बौद्धिक विकास, आध्यात्मिक उन्नयन आदि लाभ प्राप्त होता है। योग एक व्यवहारपरक विद्या है इसलिये इससे साधारण से साधारण शिक्षार्थी भी असाधारण लाभ उठा सकता है।

मनुष्य के सर्वांगीण विकास में योग की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। यह योग तत्त्व चरित्र-निर्माण, चिकित्सा विधान सामाजिक उत्थान, राष्ट्र

उत्थान एवं कल्याण की भावना को विकसित करने से लेकर परमात्मा साक्षात्कार तक का अप्रतिम साधन है।

### महर्षि अरविन्द जी का सर्वांग योग दर्शन

भारत के सभी दार्शनिकों में श्री अरविन्द ही एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं जो एक योगी तथा एक दार्शनिक दोनों हैं। श्री अरविन्द जी का जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में एक धनी परिवार में हुआ था। अरविन्द जी की शिक्षा लन्दन तथा कैंब्रिज विश्वविद्यालय में हुई। आपने गीता के कर्मयोग एवं ध्यान योग की वैज्ञानिक व्याख्या की। उनकी दृष्टि से मानव एवं दिव्य शक्ति का संयोग ही योग है। श्री अरविन्द मानव को योग द्वारा आत्म तत्व की अनुभूति कर ब्रह्म में लीन होने का उपदेश ही नहीं देते थे वे तो इसके द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञान, अन्धकार और मृत्यु से ज्ञान प्रकाश और अमरत्व की ओर ले जाना चाहते थे। अपने विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिये एक "आध्यात्मिक केन्द्र" की स्थापना की जो कि अरविन्द आश्रम के नाम से विख्यात हुआ। आपने यहीं पर अनेक ग्रन्थों की रचना की। 5 दिसम्बर 1950 को आपका देहावसान हो गया।

श्री अरविन्द जी के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य चित् सत् आनन्द की प्राप्ति है इसके लिये गीता के कर्मयोग एवं ध्यान योग का साधन बताया है। जिसमें योगी संसार (कर्मक्षेत्र) से पलायन नहीं करता अपितु सत् +चित्+ आनन्द में ध्यान लगा कर निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करता है। ऐसे योगी के लिये आवश्यक है कि उसका शरीर स्वस्थ हो, मन विकार रहित हो और जीवन संयमी हो इसलिये योग क्रिया (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि) के महत्व को स्वीकार किया है।

योग व्यक्ति में छिपी हुई शक्तियों द्वारा विधि और नियमानुसार आत्मपूर्णता की ओर प्रयास करता है तथा मनुष्य विश्व की सीमा से ऊँचे उठकर जीवन से एकता स्थापित करना अर्थात् मनुष्य और विश्व दोनों की उत्पत्ति समान रूप से हुई है उनका विकास भी समान रूप से होता है और दोनों ही सत्य तथा वास्तविक है इस प्रकार मनुष्य और प्रकृति दोनों में योग के सिद्धान्त उपलब्ध होते हैं।

श्री अरविन्द जी का सर्वांग योग दर्शन, दर्शन की वह विचारधारा है जो इस ब्रह्माण्ड को ब्रह्मा द्वारा निर्मित मानती है कि यह वस्तु जगत उस परम् सत्ता का पार्थिव सत्ता में अवरोहरण है यह आत्मा को चित्त आनन्द और परमात्मा को सत् चित्त आनन्द के रूप में स्वीकार करती है और यह प्रतिपादन करती है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य सत् चित्त आनन्द की प्राप्ति है जो कर्म योग व ध्यान योग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

श्री अरविन्द जी के शब्दों में "शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान चरित्र और संस्कृति को जाग्रत करती है।"

सर्वांग योग दर्शन के कुछ सिद्धान्त भी हैं जो निम्न है –

- यह ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा निर्मित है।
- ईश्वर और जगत दोनों ही वास्तविक सत्य है।
- मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है।
- आत्मा चित्त तथा आनन्द और परमात्मा का योग है।
- मनुष्य का विकास निम्न से उच्च की ओर होता है।
- सत्-चित्त-आनन्द की प्राप्ति के लिये कर्म योग एवं ध्यान योग सर्वश्रेष्ठ साधन है।
- योग क्रिया के लिये स्वस्थ और विकास रहित मन अवश्य होता है।

महायोगी श्री अरविन्द जी का सन्देश विश्व को भारतीय संस्कृति का संदेश है जिसमें तन, मन और प्राण सभी का समुचित सन्तोष विकास हो यह आध्यात्मिक जीवन में ही सम्भव है क्योंकि आत्मा

ही निम्न तत्वों का समन्वय कर सकती है। मानसिक स्तर का जीवन एक द्वन्द्वात्मक जीवन है यह द्वन्द्व ही आधुनिक व्यक्ति और समाज की समस्त समस्याओं का मूल कारण है इसका मात्र सुलझाव मानसिक स्तर का उत्क्रमण करना है।

मानव जाति के आध्यात्मिक स्तर पर आरोहण करने से ही विश्व की सामाजिक, राजनैतिक, समस्यायें तुलझ सकती हैं अन्य सभी प्रयत्न केवल थोड़ा निदान कर सकते हैं।

### महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचार

अपने समय और समाज में जो दायित्वपूर्ण भूमिका महर्षि पतंजलि के योग शिक्षा दर्शन ने निभायी है। समाज के प्रति वैसी ही कर्तव्य भावना महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचारों में परिलक्षित हुयी है, न केवल उन्होंने साधारण मानव के हितार्थ सरल भाषा में शैक्षिक उपदेश दिये, बल्कि सरल मार्ग द्वारा निर्वाण तक पहुँचने का पथ प्रवर्तित किया है।

योग प्राचीन काल से ही शिक्षा का अभिग अंग रहा है। योग दर्शन एक जीवन दर्शन है तथा शिक्षा जीवन संवारती है। अतः योग-दर्शन में महर्षि पतंजलि के विचारों को शिक्षा के रूप में प्राचीन काल से ही ग्रहण किया जा रहा है। योगमयी शिक्षा का स्वरूप जैसे शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्य, पाठ्यक्रम अनुशासन आदि को योग के शैक्षिक स्वरूप की संज्ञा दी गयी है। योग दर्शन मनुष्य के शारीरिक विकास और मानसिक विकास पर बल देता है, तथा शिक्षा की निरन्तरता में विश्वास रखता है। इसलिये योग मनुष्य के पूरे जीवन के लिये पाठ्यचर्या निश्चित करता है। पतंजलि के अनुसार स्वाध्याय और योगाभ्यास जीवन पर चलने चाहिये।

महर्षि पतंजलि ने जन-जन को सुखी व समृद्ध बनाने के लिये योग शिक्षा को आवश्यक बताया है। उनके अनुसार योग के द्वारा बालक के शारीरिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी होता है। अरस्तु के

अनुसार – "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।" पतंजलि ने भी योग शिक्षा को न सिर्फ बालकों को बल्कि सभी मानव जाति के कल्याण के लिये आवश्यक बताया है। योग के द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति सुखी होकर एक समृद्ध जीवन का आनन्द उठा सकती है।

महर्षि अरविन्द जी का विश्वास था कि ईश्वर सत् चित् तथा आनन्द का प्रतीक है। वह निराकार अनन्त तथा सर्वशक्तिमान है। वही संसार का कर्त्ता, भर्त्ता तथा हर्त्ता है। वही सृष्टि का नियमन करता है तथा वही प्रत्येक आत्मा को उसके कर्मों के अनुसार फल देता है। अरविन्द जी का विश्वास था कि जीवात्मा और ईश्वर दोनों अलग अलग हैं। पर दोनों में कुछ समान और कुछ असमान धर्म तथा गुण होने के कारण दोनों में व्याप्य और व्यापक का सम्बन्ध है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन के आधार पर अरविन्द जी ने ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति को अनादि तत्व माना है।

शिक्षा को अरविन्द ने नवीन दृष्टिकोण से देखा है। उन्होंने रूसो की भाँति घोषित किया है कि सूचनाओं का संग्रह मात्र शिक्षा नहीं है। "सूचनायें ज्ञान की नींव नहीं हो सकती है वे अधिक से अधिक वह सामग्री हो जाती है जिसके द्वारा जानने वाला अपने ज्ञान की वृद्धि कर सके अथवा वे वह बिन्दु है जहाँ से प्रारम्भ किया जाय।" वह शिक्षा जो अपने को ज्ञान देने तक सीमित रखती है शिक्षा नहीं है। इस प्रकार उन्होंने शिक्षा को एक व्यापक दृष्टि से अपनाया है। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में चलने वाली शोदेदश्यों सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार परिवर्तन किया जाता है इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है, जिसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं। अतः अरविन्द

ने भी शिक्षा के विकास में व्यक्ति राष्ट्र तथा मानवता माना है जिसके द्वारा व्यक्ति तथा समाज का विकास हो सकता है।

शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में महर्षि अरविन्द ने छात्रों को शरीर मस्तिष्क तथा आत्म का सर्वांगीण विकास करना है ताकि उनमें निहित दैवी

सत्य को प्राप्त करने के लिये उन्हें उपकरण के रूप में प्रयुक्त कर सके। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को स्वयं के बारे में समग्र विकास करने में सहायता प्रदान करता है ताकि अपने आपको विश्व का अंग समझ सकें।

दर्शन एवं जीवन को अलग-अलग करना असम्भव प्रतीत होता है। व्यक्ति के जीवन मूल्य आदर्श मान्यतायें ही दर्शन हैं जीवन के जो भी मूल्य आदर्श मान्यतायें व आकांक्षाएँ होती हैं। निश्चित ही वह समय समय पर नई विचार धाराओं को जन्म देती हैं। यही विचार धारायें मनुष्य को जीवन में प्रगति के लिये उनका मार्ग प्रशस्त करती हैं। यह ही दार्शनिक विचार योग्य शिक्षा व्यवस्था के निर्धारण में अपना अमूल्य योगदान देती हैं। मानव जीवन का आधार योग शिक्षा ही है। योग शिक्षा ही वह सोपान है जिस पर चढ़ कर मानव सभ्य एवं सुसंस्कृत बनता है और पूर्णत्व को प्राप्त करता है।

आज व्यक्ति का चारित्रिक स्तर गिरता जा रहा है राष्ट्रदोह भ्रष्टाचार समाजद्रोह, जातिवाद, राष्ट्रवाद आदि आग की लपटों की तरह फैलता जा रहा है। मनुष्य आध्यात्म की उपेक्षा तथा भौतिकता में विश्वास रखने लगा है। आज का शैक्षिक, सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक वातावरण व्यक्ति को दिन-प्रतिदिन मानवता से दूर ले जा रहा है। क्योंकि धन सर्वोच्च मूल्य हो चुका है। जबकि इसके विपरीत मानवता के उपासक, शांत सहज, कर्मत जीवन व्यतीत करने वाले लोगों की घोर उपेक्षा की जा रही है। इसका मुख्य कारण आज के समय योग शिक्षा का पूर्ण विकास न हो पाना है।

आज विद्यालयों में बच्चों को किसी प्रकार की नैतिक शिक्षा नहीं दी जा रही है। जिसके फलस्वरूप प्रत्येक स्थान पर अशिष्टता अराजकता व अनुशासनहीनता बढ़ रही है। छात्र - छात्राओं के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास भी नहीं हो पाता है। बच्चों के पूर्ण विकास के लिये यह आवश्यक है कि उनका आध्यात्मिक विकास भी हो। महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचार छात्रों की आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक उन्नति में सहायक है। अतः शोधकर्ता को इनके शैक्षिक विचारों के अध्ययन की आवश्यकता अनुभव हुयी। क्योंकि महर्षि पतंजलि एवं महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन आज के बदलते परिवेश के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा आदर्श युक्त शिक्षा थी निःसंकोच हम कह सकते हैं कि विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतवर्ष ने सन्तोषजनक प्रगति की है। आज हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि भारतवर्ष ने यातायात व चिकित्सा में सन्तोषजनक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। परन्तु इसके साथ ही दूसरी ओर जब हम अपनी संस्कृति व मूल्यों पर विचार करते हैं तो हमें बहुत ही शर्म का अनुभव होता है। चूँकि मूल्यों की दृष्टि से हमारा दिन-प्रतिदिन पतन होता जा रहा है और धीरे-धीरे निरन्तर शिक्षा के स्तर में गिरावट आती जा रही है। अतः शिक्षा के स्तर की गुणात्मक वृद्धि करने हेतु अनेक शिक्षा शास्त्रियों एवं दार्शनिकों द्वारा शिक्षा के अनेक पक्षों पर अध्ययन किया है साथ ही महर्षि पतंजलि व महर्षि अरविन्द जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन आवश्यक है। उपरोक्त दोनों के ही दार्शनिक विचारों द्वारा पद्धति के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने के विचार दिये गये हैं। पतंजलि के योग पर आधारित शिक्षा पद्धति व महर्षि अरविन्द जी के वैदिक शिक्षा पर आधारित शिक्षा पद्धति का वर्तमान की शिक्षा पद्धति में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है एवं शिक्षा की अनेकों समस्या का समाधान भी कर सकती है।

## निष्कर्ष

मनुष्य की प्रत्येक क्रिया का लक्ष्य उसका विकास है और शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास है यह लक्ष्य केवल विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त नहीं किया जा सकता बल्कि शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये योग आवश्यक है। योग मानव विकास का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सर्वाधिक शक्तिशाली साधन है इसके बिना पूर्ण विकास असम्भव है यम, नियम, आसन प्राणायाम विद्यार्थियों को ध्यान करने में सहायता दे सकते हैं केवल शारीरिक और मानसिक प्रशिक्षण ही शिक्षा का लक्ष्य नहीं है उसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज को सर्वांग पूर्णता की ओर ले जाना है। आज भारत में शिक्षा क्षेत्र में विचारकों और शिक्षकों के सामने अनेक समस्यायें भयंकर रूप में उपस्थित हैं तो इन समस्याओं के मूल कारणों को खोजने में श्री अरविन्द शिक्षा दर्शन से सहायता ली जा सकती है।

## सन्दर्भ सूची

1. आर्य, अशोक (2002) – निष्काम परिवर्तन पत्रिका, आर्य समाज सांताक्रुस मुम्बई।
2. अग्निहोत्री, प्रतिमा – इतिहास, विस्तृत तिथिगत अध्ययन।
3. आत्रेय, शान्ति प्रकाश – दृष्टव्य योग मनोविज्ञान।
4. उपाध्याय, पंडित बलदेव (1942)– भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर वाराणसी।
5. कपिल – सांख्य सूत्र।
6. डेनीलू, अलेन (1951) – योग द मेथेड ऑफ रीड्मिग्रेशन, केशिन्गर पब्लिसिंग को०
7. दामोदरन, के० (1970) – भारतीय चिन्तन परम्परा, पीपुलस हिन्दी प्रा०वि० दिल्ली।
8. पतंजलि, महर्षि – योग प्रदीप, गोरखपुर प्रैस, गोरखपुर।
9. पाठक एवं त्यागी – शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
10. पाण्डेय, रामशकल (2004) – शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2
11. मुनि, स्वामी ब्रह्मलीन – पतंजलि योग दर्शनम्।
12. माथुर, एस०एस० (2006) – शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार वि० पुस्तक मन्दिर हॉस्पिटल रोड, आगरा-3
13. लाल रमन बिहारी (2002) – शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सि० रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
14. जेम्स हॉगटन बुड्स (1914) – योगसूल ऑफ पतंजलि हारवर्ड यूनिवर्सिटी
15. यादव, प्रतिभा – पतंजलि योग दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा, एच.पी. भार्गव हाउस, भार्गव भवन, 4/230 कचहरी रोड, आगरा।
16. राम सकल पाण्डेय – विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, पृष्ठभूमि-25, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1996
17. द ब्रेन ऑफ इण्डिया – श्री अरविन्द
18. डॉ० अमरेश्वर अवस्थी – आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, बिरिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ संख्या 418, 422।